परमपूज्य श्री माताजी श्री निर्मला देवी

श्री माताजी का यूरोप का महान दौरा - 1989

इटली

श्री माताजी के इस वर्ष का युरोप का महान दौरा पूरे संसार के लिए इस अवतार के आने को ध्यान देने की अद्भुत घोषणा के साथ हुआ। यहाँ इटली में सभी जीवन धाराओं के लोग ऐसी अपूर्व अघटित एवम् बेमिसाल ऐतिहासिक घटना को मान्यता तथा मनाने के लिए उपस्थित थे। यह वास्तव में हार्दिक खुशी की बात थी कि 35 से भी ज्यादा देशों के करीब एक हजार सहजयोगी इस पृथ्वी के सबसे महान, अधिक प्रमाणित, जीवित अवतार द्वारा सहस्रार खोलने की 19 वी वर्षगाँठ को मनाने के लिए इकट्ठित हुए थे। ऐसे पवित्र स्थान पर अपने बहन-भाइयों के साथ एकत्रित होना वास्तव में सौभाग्य की बात थी।

गोष्ठी (सेमिनार) का शुभारंभ 4 मई को दोपहर में अतिपूजनीय श्री माताजी के नेपल्स हवाई अड्डेपर आगमन से शुरू हुआ। गुइडो को मौसम की अधिक चिन्ता थी क्योंकि पिछले दिनसे ही वर्षा श्री माताजी के आगमन के लिए शहर को धोकर स्वच्छ कर रही थी और निश्चित रूप से वह आई और उत्तम धूप मधुर मंद पवन भी अपने साथ लाई।

सभी सहजयोगी छोटे-छोटे बच्चो सहित वायुमान केन्द्र के लौंज में भजन गाते हुए तथा लाल और सुनहरे बैनर, जिसपर लिखा था "महान माँ का स्वागत" को पकड़े हुए प्रतीक्षारत थे। इटली की भूमि पर पुनः श्री माताजी का स्वागत करने के लिए सभी की अति प्रसन्नता से भरपूरित थी।

जैसे श्री माताजी नेपल्स हवाई अड्डेसे ले जाई जा रही थीं उन्होने कहा कि यह थोड़ा अच्छा ही है कि इस क्षेत्र मे नकली गुरू अभी नहीं फैले हैं और सहस्त्रार पर कोई दबाव नहीं है इससे काम अच्छा होगा।

आगे बढ़ने से पहले नेपल्स की सुरक्षा में एक घटना कहना जरूरी है जो कि नेपल्स के चोरों के बारे में कही बात के बिपरीत है (वे आपके पहने जूते से, आपके अनजान में, मोजे चुराने के लिए मशहूर हैं) हमने हवाई अडड्डेपर चुंगी दे दी थी: परन्तु अपने आगे वाली कार से संबंध न खोने के लिए हम लोग छुट्टा (पैसा) नहीं लेना चाहते थे। शीघ्र ही एक पुलिसवाले ने आगे बढ़कर हमारी कार को रोक दिया। हम सोचने लगे कि हमने क्या अपराध कर दिया

है परन्तु उसने हमारा छुट्टा वापस किया, धन्यवाद दिया और लौट गया।

सोरन्टो के कैम्प जिनमें हम रुके हुए थे गणपति पुले के उन घरों की याद दिला रहे थे जो समुद्रतट पर हैं। यह महसूस करना विस्मयकरी था कि वहाँ दिल को छूने वाली शांति छाई थी। यह एक खास बात थी कि श्री माताजी 4 मई की रात को बिल्कुल नहीं सोईं और सहस्त्रार खुला रखने के लिए अधिक प्रयत्न करती रहीं जिससे हम लोग पूजा में अधिक से अधिक लाभ उठा सके।

5 मई, शुक्रवार का दिन कैप्री टापू पर नौका यात्रा के लिए निश्चित था। यह एक सुन्दर और सुहावनी सुबह थी और हम लोग अत्यन्त खुश थे कि श्री माताजी भी अन्य सहयोगियों के साथ कैप्री टापू पर एक बड़ी नौका में आ रही थीं। उन्होंने सारांश रूपसे हम लोगोंको बताया कि उनके पास छोटी-छोटी व्यक्तिगत समस्यायें लेकर जाना हम लोगों की अपरिपक्वता हैं। हम व्यक्तिगत समस्यायों से ऊपर उठ कर सामूहिक समस्यायों को हल करने में मदद करें; हमे सहजयोग पर दायित्व न बनकर धरोहर बना चाहिए। सभी, जो व्यक्तिगत, आर्थिक, भावात्मक समस्यायों से ग्रस्त हैं, सामूहिक से अपने को अलग रक्खे जब तक की वे पूर्ण (स्वस्थ्य होकर) जम नहीं जाते। उन्होंने कहा कि मानिये आप जलयान पर है और आपको कैंची चाहिए और आप उसके लिए परेशान है क्योंकि आप इसे नहीं पा रहे है परन्तु अगर जलयान पर कैंची हैं ही नहीं तो इसके तलाश की समस्या क्यों खड़ी करना?

कैप्री पर उतरनेके बाद इस टापू के एक तरफ श्री माताजी ने दो मशहूर चट्टाने समुद्रसे निकली हुई देखी जिसमें एक धनुषाकार थी। उन्होने कहा कि इसी तरह जेन गुरू प्रकृति की सहायता द्वारा इच्छुक खोजी जनोंका निर्वाच स्थिति में आने का मार्गदर्शन करते थे। वहाँ बैठ और अदितीय दृश्य का आनन्द लेने के उपरान्त (भूमध्य सागर इस क्षेत्र में अत्यधिक नीला है) हमें अकस्मात ही बैटरी चालित सामान गाडी श्री माताजी को बिठाने और कैप्रुलकार तक ले जाने के लिए प्राप्त हुई, जो हमे बंदरगाह तक समय से नाव पकड़ने को ले गई। इस तरह के अनोखे वाहन के साथ गाते और नाचते हुए हमारा सहज जलूस चला था। यह आश्चर्य है कि किस ढंग से श्री माताजी हमारी इच्छाओं के अनुरूप व्यवस्था करती हैं और उन्हे पूरा करने के लिए मार्ग व वाहन भी पैदा करती हैं।

एक सहजयोगी, जो मार्ग में फोटो खीचा था, कैप्री में उन्हें बतलाया और श्री माताजी को भेंट किया। कैमरे ने एक बार फिर से उनके सत्य रूप को चमत्कारित ढंग से दिखाया जिसको, क्रमशः फोटो द्वारा, कई फोटो से कोई भी स्पष्ट रूप से देख सकता हैं। फोटो नं· ।

में हम सब उनके पास बैठे भजन गा रहे हैं। फोटो नं· 2 में हर चीज थोड़ी धुंदली हो गई है। फोटो नं· 3 में उनके अन्दर तीनों शक्तियों - महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती को उठते हुए कोई भी देख सकता है। फोटो नं· 4 में महालक्ष्मी शक्ती उनके अज्ञाचक्र को पार करती हुई सहस्त्रार को भेदती है और कोई भी उनके चारों तरफ बिखरती हुए प्रकाश को देख सकता है। यह वास्तव मे चमत्कारिक फोटो था।

5 मई की रात को हम सोरन्टोके एक सभा भवन (हाल) मे गये जहाँ शहर के मेयर ने श्री माताजी और सहजयोगियों के लिए सांस्कृतिक नाच और गाने का इन्तजाम किया था और उन्हें सोरेन्टो के प्रतीक कुछ उपहार दिया। बहुत तेज व समृध्द गान और पारम्परिक वेशभूषा के नृत्य के बाद मंच स्वीटजरलैन्ड के श्री जोजे के लिए खाली कर दिया गया, जिन्होंने सहज ढंग से कुछ जाने माने सहजयोगियों को प्रदर्शित कर हम लोगों का अत्याधिक मनोरंज किया।

6 मई की सुबह, 18 फीट की उँचाई से पीठ के बल सख्त जमीन पर गिरे हुए, एक बच्चे को श्री माताजी ने चमत्कारिक ढंग से बचाया। फिर वह सभी सहजयोगी नेताओं सें मिली और यूरोप के समस्त दौरे को निर्धारित किया। जब तक वह पूजा के लिए आई चन्द्रमा का काले पक्ष का दोरा समाप्त हो चुका था और पूजा की गई। मंच बहुत सुन्दर ढंग से सजाया गया था जिसमें श्री चक्रा उनके सिंहासन के ऊपर था जिसमें सात चक्राकार इसमें जमीन की ओर थे, उनमे फल और लतायें लिपटी हुई थी। पार्श्व में एक सहजयोगी द्वारा बनाया एक चिन्न था जो विराट में उत्क्रान्ति के ढंग को प्रदर्शित करता था।

श्री माताजी पिछली रात केवल दो घंटे सोने के पश्चात भी सदा की तरह तरोताजा और दीप्तिमान दिख रही थी। पूजा का शुभारंभ हर बार जैसा हुआ परन्तु उन्होने बीच में हम लोगों के गाने को रोक कर सलाह दिया कि एक हाथ हृदय पर रख कर तथा यह भावना के साथ कि यह कितने सौभाग्य की बात है कि वे आदिशक्तिके समक्ष गा रहे हैं, वे पुनः गानों को गायें। इससे अत्यधिक अन्तर हुआ। उन्होने कहा कि पूजा के समय फोटो ले कर ध्यान को भंग न करे। अगर हम यह नहीं समझ पा रहे हैं कि वे क्या कह रही है तो हमे अपने अंतःकरण से उन्हे समझने का प्रयत्न करना चाहिए। उन्होने पूजा भाषण में क्या कहा यह बताना यहाँ संभव नहीं हैं परन्तु टेप मिलने पर पाठकगण सुन सकते हैं। परन्तु यह तो कहना होगा कि पूर्ण पूजा और भजन इतना गहन, समयानुकुल और उपयुक्त था हमें निर्विचार के दूसरे संसार में, शांति के ऐसे सागर मे पहँचा दिया जहाँ प्रसन्नता का पारावार न था और हर लहर हम लागों की ज्ञान के उच्चतम सतह पर ले जा रही थी।

श्री माताजी बहुत खुश थी कि उनकी चैतन्य लहरियाँ सहजयोगी अपने मे समावेश कर पा रहे थे। पूजा के पश्चात उन्होने पुरुषों को सिल्कके कुर्ता और कमीजें और स्त्रियों को सिल्क की साड़ियाँ बाँटी, जिन्होंने सहजयोग प्रसारण में कठिन प्रयत्न किया था।

9 मई, रविवार को, हम लोगोंने सहजयोग के पोस्टर हर मुख्य दुकान के शीर्षों, सड़को के कोनो पर देखे। सायंकाल के कार्यक्रम में सोरन्टो के इच्छुक व्यक्तियों की अच्छी उपस्थिति थी। जिनको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ उनमे डाक्टर इन्जीनियर और आर्कीटेक्ट थे। जब श्री माताजी इच्छुक खोजी लोगोंसे व्यक्तिगत रुप से मिल रही थी और उनकी बाधाओंको हल कर रही थी, हाल में भजन, गान और नृत्य चल रहा था। सभी जो प्रश्न पूँछे गये थे वे आत्मसाक्षात पानेके इच्छुक खोजी जनोंसे थे। जैसे ही अंतिम इच्छुक को आत्मसाक्षात्कार मिल गया आतिशबाजियों की ध्वनि की गई जैसे कि इस सुन्दर शहर सोरन्टो की इस सुन्दर ऐतिहासिक घटना को शिखर पर पहुँचाया गया है।

8 मई, सोमवार, नेपल्स जाते हुए मार्ग में श्री माताजी पोम्पई शहर को देखने केलिए रुकी, जो कि वे सुवियस की तलहटी में बसा हैं और जो रातभर में ही पत्थर और राख के ढेर में बदल गया था। श्री माताजी ने कहा कि यह एकदश रुद्राका एक भाव है जिसने उस स्थान के अत्यधिक अहंकार (इगो) को अंकुश लगाया। इसके बाद थोड़े समय के लिए वे टोरेडेल ग्रीसो कस्बे में रुकी जो संसारभर में सस्ते और सुन्दर मूँगो (कोरल्स) के लिए मशहूर है।

नेपल्स के कार्यक्रम में भीड़ को देखकर लगा कि श्री माताजी को 1988 के इस शहर के दौरे के अच्छे लाभ इस वर्ष मिल रहे थे। इस हाल के अन्दरकी सजावट एक अद्भुत चित्रकारी ढंग से की गयी थी। पुरानी शीशे के प्रकाश यंत्र, छत और दिवारों के पेंचीदे कार्य अपने कार्यक्रम के लिए पूर्ण पार्श्व का काम कर रहे थे। उनके आनेपर दूरदर्शन के लोग उनका (इंटरव्यू) साक्षात्कार लेने की प्रतीक्षा कर रहे थे। अच्छे प्रश्न किये गये थे। नेपल्स लोगों के पूछने पर श्री माताजी ने कहा कि यहाँ के लोगों का सुन्दर और खुला दिल है, क्योंकि अपनी माँ के लिए उनके हृदय में बहुत प्यार और श्रध्दा है। हाल के द्वार पर एक स्त्री जिसको वर्टिगो की शिकायत थी, इंतजार कर रही थी। श्री माताजी ने कुछ मिनटतक उसकी कुंडलिनी पर कार्य किया साफ किया और वह काफी राहत महसूस करने लगी। यह बहुत बड़ा हाल था और पूर्णतः भरा था और सभीको सामुहिक रूपसे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ। उनमेंसे 100 लोगों ने एक दिन के जागृति कोर्स में भाग लेने लिए अपना नाम दर्ज कराया।

कार्यक्रम के बाद श्री माताजी सवेरे तीन बजे रोम के निर्मल निवास में वापस आ गयी।

रोम

8 मई शाम रोम में स्टेशन के समीप एक बड़े केंद्रीय हाल में श्री माताजी का कार्यक्रम दो दिन के लिए था। यहाँ भी काफी लोग आये और उन्हे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ। एक महिला जो यकृत के कैन्सर से पीड़ित थी इस दो दिन के दौरान श्री माताजी से दो बार मिली उसे काफी आराम हुआ और साक्षात्कार भी पायी। श्री माताजी इतने सरलता और करुणा के साथ बोली की सभी लोग सहजयोगको सहज में लिया और अनुसरण कार्यक्रम में नियमित आने का वादा किया। रोम के मध्य में अगले दो महिनें तक सप्ताह के हर दिन कार्यक्रम रखा गया था।

रोम के समीप मंगलभवन नाम का एक दूसरा आश्रम है। वहाँ पाँच साल से कम, सोलह बच्चे हैं, जिनसे मिलकर बहुत खुशी होती है। वे चक्र और चैतन्य लहरी के ज्ञान में काफी प्रवीण है, वे काफी ज्ञानी, चुस्त और प्यारे हैं। ।। मई की शाम उन्होनं चार्ली चक्रापर सुन्दर नाटक श्री माताजी के लिए प्रदर्शित किया और सहजयोगके कुछ गीतोंसे नृत्य भी किया।

रात्रिभोज केलिए धधकती भट्टी से अकबरने बहुत स्वादिष्ट पीजा आश्रमके सहजयोगियोंके लिए पकाया। इसके बाद श्री माताजी बोली की बच्चो को कैसे पालना है, सहजयोग का प्रसार कैसे करना है और नये लोगोंसे कैसे पेश आना है। उन्होंने कहा कि हमें नये लोगों को बताना चाहिए कि स्वर्ग के साम्राज्य में थोड़ीही जगह है और वह शीघ्र ही भर रही है अतः वे लोग शीघ्र आये और प्रवेश करे।

स्पेन स्पेन

।8 मई को करीब तीन बजे श्री माताजी स्पेनिस वायुयान आईबेरिया द्वारा यू॰के॰ (इंग्लैंड) से आई। उनका स्वागत व अभिनंदन मेडरिड व जरागोवा के सहज योगीयों ने किया। यू॰ के॰ के ठंडे मौसम से स्पेन के उमस व गर्म, 33 सेंन्टीग्रेड, तापमान में पहुँचे। श्री माताजी शीघ्र दाहिनी तरफ को नीचें लाई कुछ क्षण में ही ठंडी हवा बहनी लगी और नीले आसमान में बादल आ गये।

शहरके निचले भाग में एक होटल के सभाभवन मे कार्यक्रम रखा गया था और शहर जाते समय दुहरा इंद्रधनुष दिखाई दिया जो की जनकार्यक्रमवाले स्थान से ही उध्दारित होता प्रतीत हो रहा था। श्री माताजी के पोस्टर रास्ते में सभी मुख्य स्थानों पर लगे थे। श्री माताजी ने सलाह दिया कि यदि नियमा नुसार पोस्टर लगा सकते है तो पोस्टर पर अपने केन्द्र का

पता भी लिखना चाहिए। हम यह भी लिख सकते है कि फोटो की तरफ हाथ की दोनो हथेलियाँ फैलाने से वे ठंडी ठंडी हवा महसूस कर सकते है। इस तरह से राह से गुजरने वालोंको उनके (श्री माताजी) चले जाने बाद भी आत्मसाक्षात्कार मिल सकता है और केन्द्र से संपर्क भी कर सकते हैं।

जब श्री माताजी आई तो हाल खचाखच भरा था। चारों तरफ लोग जमिन पर बैठे थे। यह सभ्य और पढे लिखे जनोंकी भीड़ थी और उन्होंने बुध्दीमानी के प्रश्न पूछे। अपने भाषण के बाद उनसे व्यक्तिगत रूपसे मिलकर और उन्हे आशिर्वादीत कर श्री माताजी बहुत खुश थी। उनमें बहुत से खोजी लोग थे जो गलत गुरूओं से प्रभावित थे फिर भी आत्म साक्षातकार पाये। पोलियो और स्पान्डाईलीटिस के बिमार वही तुरन्त ठीक कर दिये गये। वहाँ कई व्यक्तियों ने भूत बाधा की शिकायत की और उन्हे भी ठीक किया जा रहा है। कार्यक्रम रात्री के 12-30 के करीब समाप्त हुआ लेकिन सभी सहज योगी इतने अधिक नये लोगो को देख कर खुश थे जिन्होने वादा किया कि अगले सप्ताहकेन्द्र पर उपस्थित होंगे।

अगले दिन प्रातः श्री माताजीने बर्सोलोना जाने के लिए वायुमान लिया। वहाँ 200 के करीब सहज योगी गुलदस्ते लिए श्री माताजी के स्वागत के लिए खडे थे। बिना आराम किये इसके बाद श्री माताजी जन सभाको संबोधित करने गई। हाल पूर्णतः भरा था और करीब सभी को जागृति मिली कुछ खोजी लोग गलत गुरूओं द्वारा वास्तव मे बरबाद किये गये थे। एक आदमी जो योगनन्दा का शिष्य था, सहस्त्रार के कैन्सर से भुगत रहा था। उसे साक्षात्कार प्राप्त हुआ और वह सुधार के मार्ग पर है। उनमे बहुत से टीथम, सिद्धयोगा, बालयोगी और रजनीश वाले थे जिन्हे भी जागृती मिली। श्री माताजी की करूणा इतनी अधिक है कि इतनी अधिक गलतियों और चक्रो को नष्ट करने के बावजूद उन्होने उनकी बाधाओं के सोख लिया और उन लोगों को क्षमा कर दिया।

2-2 1/2 घंटे विश्राम के पश्चात लड़के सबेरे ही श्री माताजी श्री बुद्धपूजा के स्थानपर पहुँचने के निकल गई। यह काव्यमय, मनमोहक हरे भरे पहाडों से घिरा स्थान था। किसी को भी संदेह होगा कि यहाँ अधिक यात्री बर्सोलोना के इतने सुन्दर स्थान को देखने आते है। श्री माताजी को महसूस हुआ कि उस स्थान पर प्रकृतिउनके अभिनन्दन में नतमस्तक थी जहाँ चोटीपर इलफारेल होटल था, जिसमे पिछले दो रात सभी सहज योगी ठहरे थे। पूजा की व्यवस्था खुले स्थान पर की गई थी जहाँ से सारी घाटी दिखती थी। पर्वत के दूसरे ओर का दृश्य

नासिक के नजदीक वणी के सप्तश्रृंगी मंदिर के समान था। भूमी का रंग गणपती पुले की मिट्टी जैसा था।

यह एक सुअवसर था कि श्री बुद्ध पूजा स्पेन में हो रही थी। जन कार्यक्रम के समय से ही यह बिल्कुल स्पष्ट था कि स्पेन के खोजी लोगों का आज्ञा चक्र पकड़ा था क्यो कि वे आसानी से क्षमा नहीं कर पा रहे थे। जैसे ही सेनडियागो में कहे गये मंत्रों को जार्ज पढ़ने लगा, अचानक उसे महसूस हुआ कि बुद्ध पन्ने गायब है और वह सहज में इच्छानुसार कहने लगा और वे ज्यादा असरदार हुए।

श्रीमाता जी ने सहज और विनोद से भरा भाषण दिया। बहुत सुन्दर ढंग से उन्होने बुद्ध के जीवन का अभिप्राय और उसका हमारे लिए क्या महत्व है, को समझाया। उन्होने स्वयं को "हँसमुख बुद्ध" बताया। इस पूजा का उनका संदेश था कि सभी अहंकार से बचे और किस तरह से वह सबपर, श्री माताजीपर भी, आक्रमण करता है।सभी कोई इसे देख सकते हैं केवल उस व्यक्ति के सिवा जिस पर उसका प्रभाव हुआ है। लोगों ने पूँछा कि हममें अहंकार क्यो होता है? उन्होने कहा कि यह उनके कारण नहीहै क्यों कि उन्होने हम सब को जागृति दी है और यह हम लोगो का दायित्य है कि हम इसे बना कर रखे और इसके पकड़ में न आये या इससे बचते रहे परंतु स्वयं का निरिक्षण करते रहें। उन्होने कहा कि हमें अपने प्रति सत्यवादी होना चाहिए। सत्य ही सब की शक्ति है और अपनी जागृतीसे हमें शर्म नहीं होना चाहिए। पूजा के समय उन्होने कहा कि लगता है जैसे यह देवलोक है और सभी देवता यहाँ आये हैं और आसन ग्रहण किये हैं। उन्होने आशा व्यक्त की कि कैमरे उसका फोटोग्राफ खीचेंगे।

पूजा के पश्चात सभी देशों से आये नेताओं ने श्रीमाता जी को सुन्दर उपहार भेंट किये। स्पेन से माँ के लिए उपहार स्वरूप कुंआरी मेरी की इलग्रीको पेन्टिड्ग थी जिसे आठ नौ सहजयोगियों ने मिलकर बनाया था। यह कितनी ही सुन्दर थी और श्री माताजी उसे देखकर भावीतरेक रो पडी। श्री माताजी ने इस पेन्टिग को पिछले वर्ष परेडो में मेड्रिड में देखी थी, और इसे बहुत पसन्द किया था और बोली थी "उन सब की कुंडलियों को देखो" क्योकि सभी संतों के सिर पर अग्नि शिखा प्रज्वलित थी।

पूजा के बाद श्री माताजी ने कुछ विश्राम किया फिर पैशियोंपर आई और सहजयोगियों के साथ बैठी और फिलवार्ड की भलाई के लिए सहज योग के चमत्कार के बारे में उन लोगो से वार्तालाप किया।

दूसरे स्थान के शाम के कार्यक्रम में पहले दिन से भी दुने लोग थे। यह आश्चर्य की बात थी कि जोजे पार्टी द्वारा प्रस्तुत किये गये भारतीय संगीत कार्यक्रम को भीड़ने बहुत प्रसन्न किया। वे धुन में गा रहे थे और लय पर थिरक रहे थे। बर्सोलोना के भारतीयों को विश्वास नहीं हो रहा था कि पश्चिमी लोग हिन्दी, मराठी व संस्कृत इतने सुन्दर ढंग से बोल सकते थे। काफी लोगों को संगीत सुनते समय ही जागृति प्राप्त हो गई थी। श्री माताजी को सारे चक्रो को खोलने की विधि को नहीं करना पड़ा, उन लोगोंने हथेलियाँ फैलाँयी और चैतन्य को महसूस करने की पुष्टि कर दी।

अदन (एथैन्स)

आरम्भ करते हुए, लंदनके हीथरो हवाई अड्डे पर 25 मई को जाहाज के उड़ान में देर हो गई। अदन मे उतरने पर बादमे हमे ज्ञात हुआ कि वहाँ के सहजयोगियों को श्री माताजी के आने की तैयारी तथा उनके दौरे के प्रत्येक पहलू पर बारीकी से विचार करने के लिए उतने समय की जरूरत थी। और उधर श्री माताजी को उनके जीवन और काम पर बनाई जाने वाली फिल्म के बारे में श्री निक ग्रैनवी से संक्षेप में बातचीत की जरूरत थी।

मार्ग में श्री माताजी ने ग्रीस के मौसम को सुधारा और उनके पहुँचने पर सहजयोगियों ने उनको बताया कि चमत्कारिक ढंग से वहाँ के मौसम का तापक्रम 10 सेन्टीग्रेड गिर गया है और उसके साथ-साथ बेमौसमी बारिस हुई है। उनका हवाई अड्डे पर आश्चर्यजनक जोरदार स्वागत किया गया। क्योंकि उनका ग्रीस का पहला दौरा था, इसलिए अन्य देशों के बहुतसे प्रतिनिधि दैव्य की सेवा में पुनः उपस्थित थे। ग्रीक नागरिकों को मुक्ति दिलाने की कोशिश देख कर अति प्रसन्नता हुई। गुइडो रोमसे अपनी मर्सिडीज कार श्री माताजी के प्रयोग के लिए लाये थे।

श्री माताजीके, ग्रीक नेता स्टामाईटिस के द्वार पर पहुँचने के कुछ मिनटों बाद, एक बुजुर्ग व्यक्ति द्वारा श्री माताजी के लिए एक आकाशवाणी साक्षात्कार का प्रबंध किया गया और उसे भी साक्षात्कार के दौरान ही शीघ्र जागृति मिल गई। उसने श्री माताजी के प्रति अत्यधिक सम्मान व शिष्टाचार दिखाया और उसने श्री माताजी द्वारा किये जा रहे कार्य की दृढतापूर्वक सहमति दी।

श्री माताजी को लंदन उनके घर से फोन आया कि वहाँ पानी की बहुत कमी हो गई है। उन्होने इसे बंधन दिया और दूसरे दिन हम लोगोंने समाचार पढ़ा कि लंदन के उत्तरी भाग में बाढ़ आगई है और पानी की समस्या से निपटने के लिए पानी भंडार में काफी पानी था

श्री अथेना की पूजा 25 मई को हुई। अथेना का अर्थ है आदिशक्ति। अथ माने आदि और येना माने माँ। पूजा सुबह मे होनी थी परन्तु रात के देर तक के कार्यक्रम के कारण

यह अगले दिन काफी देर शुरू हुई क्योंकि पूजा की सारी तैयारियाँ करनी थी। श्री माताजी ने बताया कि यह दोपहर के पहले की जा सकती थी परन्तु बाद में नही क्यों कि दोपहर से शाम 4 बजे तक देवगण सो जाते हैं, इस तरह पूजा 4 बजे शुरू हुई।

पूजा के दौरान श्री माताजी ने अथेना और ग्रीस के आध्यात्मिकता के बारे में विस्तार से बताया (इसका सारांश अगले अंक में दिया जायेगा)

भाषण के बाद श्री माताजी को एक कवच उपहार में दिया गया जो सर्पो, एक भाले और लाल कलगी सहित हेलमेट जैसे मुकुट से सजा था और इस पर तीन नाड़ियाँ दर्शाई गई थी। एक सुनहरी रंग की छाती प्लेट थी जिस पर कुंडलिनी दिखाई गई थी।

फिलवार्ड ने सुकरातके क्षमायाचना के कुछ अंश पढ़े। फिर स्टे मैटिस जिसने आदिशक्ति के 108 नाम की खोज पुरातन पुस्तकों से की थी, उन्हे पूजा के समय श्री माताजी के अर्थ सहित सुनाया। इस दौरान चैतन्य लहरियाँ बहुत तेज थी। श्री माताजीने, उनके पाँव पर डाले गये 5 तत्वोंसे, जो साधारणतया हाथ पर डाले जाते हैं, वास्तविक "चरणामृत" बनाया और चैतन्य लहरियाँ अत्यधिक तीव्र थी।

अन्तरराष्ट्रीय (सहजयोगी) समूह की तरफ से श्री माताजी को यूनानका पारम्परिक सुनहरा हार अँगुठी और कंगन भेट किया गया। यूनानी सहजयोगियों की ओर से सभी बिदेशी सहजयोगीयों को गमले में लगा जैतून का वृक्ष अपने साथ ले जाने के लिए दिया गया।

उस दिन शाम को गैन्ड बिटाग्ने होटल मे एक जन कार्यक्रम हुआ। जिसमें करीब 700 सत्य खोजी हाल मे भरे थे। उन्होने यूनान की महान विरासत की चर्चा की। ग्रीक लोगों को बहुत पहले से सेक्रम हड्डी, कुन्डलिनी शक्ति और इसके चक्रों का ज्ञान था। उन्होने कहा कि वे लोग प्रगति से आशिर्वादित थे। (उदाहरणार्थ उन्नत जहाज रानी उद्योग) फिर उनका पतन हुआ क्योंकि वे अध्यात्मिकता को कायम न रख सके।

कार्यक्रम में अधिकांश लोगो को जागृति मिल गई और वे अगले दिन आने का वादा किये। श्री माताजी को हर किसी को व्यक्तिगत रूप से मिलने के बाद कार्यक्रम 1 बजे (सुबह) खतम हुआ। फिर हम सरायं में रात्रि भोज के लिए गये जहाँ हमने युनानी भोज खाया और बैजोन किस तथा लोकगीत सुने। उसके बाद सहजयोगी मंच पर गये और संगीत गाये। फिर श्री माताजी सुबह 4 बजे सोने के लिए गई।

प्रातःकाल कुछ समाचार पत्रों ने रात्रि के कार्यक्रम का वृतान्त बहुत ओछेपन से छापा था। परन्तु फिर भी हाल खचाखच भरा था - 750 लोग अन्दर थे, होटल अधिकारियों ने

सोचा कि इससे अधिक व्यक्तियों को अगर अन्दर जाने दिया गया तो आग का खतरा होगा। करीब 75 व्यक्ति जो श्री माताजी को पिछले दिन नहीं देख पाये थे अधिकारियोंद्वारा अन्दर जाने पाये और वे मंच के चारों तरफ बैठे। जब श्री माताजी ने बताया कि मर्सडीज कार जिसका जिक्र आजके समाचार पत्र में किया गया है, वह उन्होंने ही कुछ वर्ष पहले रोम आश्रम को भेट में दिया था। यह सुन कर श्रोताओं ने गड्गडाहट से तालियाँ बजाई जो अभी तक उन झूठे गुरूओं के आदी थे जो शिष्यों से चीजे छीनते ही है। कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा।

घरपर श्री माताजी ने बताया कि खोज के बहुतसे स्तर हैं। यह परिवार, धन या शक्ति पाने की होती हैं। लेकिन यह प्रवृत्ति खोजी को आनन्द नहीं देती, यह सिर्फ कष्ट ही देती है। ज्ञान से कोई ईश्वर को नहीं जान सकता। भक्ती ही उन तक पहुँचने का रास्ता है। उन्होंने वहाँ कबीरके गीतों को सहयोगियोंको समझाया और बहुत सी चमत्कारिक कहानियाँ सुनाई। वे 3 बजे सुबह सोई।

अगले दिन इस्तांबूल के लिए हमे प्रातःकी उड्डान पकडना था। फिर दुसरा चमत्कार हुआ। करीब 20 सहजयोगी उसी उड्डान से जाना चाहते थे जिससे श्री माताजी जा रही थी और वह भरा था। जब हम 7 को प्रमाणित टिकट मिल गया तो स्टेमाइटिस ने हम लोगों की सहायता के लिए श्री माताजी से प्रार्थना किया। जब श्री माताजी ने बंधन दिया तो 12 व्यक्ति, जिनका सामान भी चेक हो चुका था और प्रमाणित टिकट भी था, अचानक न जाने का फैसला किया; और जहाज से उतर गये और सहजयोगी आ सके। इसीबीच, थोड़ी देर होने के कारण, श्री माताजी ने याददाश्त स्वरूप यूनान की कुछ चीजे हवाई अड्डे से खरीदली।

टर्की

इस्तंबूल में एक इटैलियन महिला, श्रीमती करला मोंट्टिनो हम लोगो की मेजबान थी। उन्होने अकेले ही, गुड्डो और अकबर की सहायता से श्री माताजी के दौरे का प्रबंध किया और वे पहले ही सारे प्रबंध को ठीक-ठीक होने के लिए वहाँ जा चुके थे।

युरोप मे ऐसा एशियाई शहर, उसकी मिनारें व मस्जिदें देख कर आश्चर्य हो रहा था। श्री माताजी शहर के परिवर्तन, उसके विकास और स्वच्छता को देख कर आश्चर्य चकित थी। श्री माताजी ने टिप्पणी की कि तुर्क लोग बचे रहे क्यों कि उनका धर्म झूठे गुरूओं को मानने से बचाता है।

पुष्प बहुत बड़े और सुगंधित थे। मौसम सबके लिए आश्चर्य का था, दौरे के पहले, पारिस के बाद, मौसम ठंडा हो गया था। करला का घर बस-फोरस नदी के ठीक किनारे पर

था और वहाँ से हम जहाजों को आते जाते, और मछुआरो को कम मे मछलियाँ पकड़ते देख सकते थे।

दोपहर बाद श्री माताजीने इस्तंबूल के मध्य में पुराने बाजाराको देखा श्री माताजीने कुछ सामान खरीदा और वहाँ उपस्थित यूरोपीय नेता पूजा के लिए चाँदी के शीशे के फ्रेम जिसके बार्डर और हैंडिल पर काम किया गया था, खरीदा।

सड़के वास्तवमें भरी हुई थी क्योंकि पाकिस्तान की बेनजीर भुट्टो भी वहाँ दौरे पर थी। गुड्डो को कार पार्क करने की जगह न मिल पायी तो सड़क के बायें तरफ एक जगह रोक दिया। लोग वहाँ चिल्लाने लगे परन्तु वह मुड़कर मुस्करा कर कहा "मैं अपनी माँ को साथ लाया हूँ।" इससे सब का क्रोध शांत हो गया और श्री माताजी ने कहा, "देखो उनमें माँ के प्रति कितनी श्रध्दा है, वे समझते है।"

पोस्टर और प्रचार बहुत अच्छी तरह से किया गया था, उन पर नीचे श्री माताजी के अवतार संबंधित कुरान के श्लोक लिखे थे। किसी मुस्लिम देश में महान कार्यक्रम आयोजित करने का यह प्रथम प्रयत्न था।

लोगोने कार्यक्रम में बहुत अबोध प्रश्न पूंछे। इन लोगो का विचार था कि भारतीय गुरू काँटो पर सोते हैं और श्री माताजी उनकी आशा के बिल्कुल विपरीत निकली। छोटे से भाषण के पश्चात "जागृति" दिया गया।

27 मई की प्रातःकाल 50 सहजयोगियोंने श्री बेगम पाशा पूजा देखी। श्री माताजी ने बताया कि हमे अपना हृदय समुद्रके समान विशाल बनाये रखना चाहिए और प्रेम की नदियों को इसमे बहने देना चाहिए। हममें आत्मसम्मान और दूसरों के प्रति सम्मान की भावना होनी चाहिए। हमें अपना विवेक प्रयोग कर मर्यादा की परिधि के अन्दर रहना चाहिए।

हमें अपना हृदय खोल कर श्री माताजी को उसमे विराजवाना चाहिए। वह क्षुद्र हृदय के लोगों मे वास नहीं कर सकती इसलिए अपने हृदय को बढ़ा कर व्यापक बनाना चाहिए जिससे वह श्री माताजी के असीमित प्यार का समावेश कर सके।

शाम का कार्यक्रम इस्तंबूल के हिल्टन होटल में बहुत सफल रहा जिसमें बहुत व्यवसायिक और कुछ संवाददाता आये। स्विस मंडली द्वारा संगीत का कार्यक्रम हुआ। जागृति के बाद बहुत लोगों ने नियमित आने का वादा किये। अकबर और एनी एक आर्मीनियम सहजयोगी ग्रीस के। तदान्तर कार्यक्रम में नये सहजयोगियों की सहायता के लिए रुक गये।

श्री माताजी टर्किश हवाई जहाज से चली गई और आश्चर्यजनक शिष्टाचार और चैतन्य सेवा से बहुत प्रसन्न थी। उन्होने कहा कि भारत वापस जाते समय वह इस्तंबूल रूकेंगी और टर्किश हवाई जहाज से फिर उड़ान करेगी।